28 Nakshatra Stuti – नक्षत्र मंगलदायक स्तुति

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

सूर्यसिद्धान्त में सूर्यावतार पुरुष ने मयासुर से कहा है– 'मैंने ग्रह तथा नक्षत्रसम्बन्धी दिव्य उत्तम ज्ञान तुम्हें उपदिष्ट किया है। इसके ज्ञान से व्यक्ति सूर्य आदि लोकों में शाश्वत स्थान प्राप्त कर लेता है।' याजुषज्योतिष में लिखा है– 'जो विद्वान चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र के चरित को जानता है, वह विद्वान सोमसूर्य

तथा नक्षत्र से प्रचरित प्रसिद्ध चन्द्रलोक, सूर्यलोक और नक्षत्रलोक को प्राप्त करता है अर्थात् वहां जाकर वहां के सुखों का उपभोग करता है और संसार में पुत्रपौत्रादि को प्राप्त करता है।' बृहत्संहिता में भी ग्रहनक्षत्रों के विषय में लिखा है- 'जिन्होंने गृहस्थाश्रम का परित्याग कर वन का ही आश्रय ग्रहण कर लिया है, जो ममता से रहित और आसक्ति से शून्य हैं, वे भी ग्रहनक्षत्रों की गति को जानने वाले ज्योतिर्वेत्ता से अपने विषय में प्रश्न पूछते हैं।' 28 नक्षत्र हैं। फल कथन में 27 नक्षत्र ही गिने जाते हैं। अभिजित नहीं लिया जाता। एक राशि सवा दो नक्षत्र (नौ चरण) की है। अर्थात् एक राशि में चन्द्रमा सवा दो दिन रहता है। नक्षत्र से ही नाम का निर्धारण होता है। शास्त्रपुराणों में इन नक्षत्रों को दक्षप्रजापति की कन्या और चन्द्रमा की पत्नी के रूप में कहा गया है। कुण्डली में चन्द्रमा जिस अंक में होता है, वही राशि जन्मराशि होती है। ज्योतिषशास्त्र में नक्षत्रविज्ञान बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा करण- ये पांच अंग पंचांग कहलाते हैं। इनकी स्थिति के अनुसार ही शुभमुहूर्त निकाला जाता है।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

पृथ्वी पर जन्मा कोई भी जीव ग्रह नक्षत्रों के प्रभाव से मुक्त नहीं हो सकता है। इनके परिवर्तन से ही जीवन में शुभ अशुभ परिवर्तन होते हैं। नक्षत्र एवं ग्रहों की चाल के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि और सृष्टि में स्थित प्रत्येक जीव अवश्य प्रभावित होते हैं। अतः ग्रहनक्षत्रों का नित्य ध्यानपूजन करने से मानव उनसे कल्याण की कामना कर सकता है। कोई भी मांगलिक कार्य आरम्भ करने से पूर्व इन सर्व नक्षत्रों की स्तुति करने से मनुष्य नक्षत्रों की कृपा प्राप्त कर शुभता प्राप्त करता है। नित्य इनकी स्तुति करने से मनुष्य का सर्वप्रकार से कल्याण होता है। जो व्यक्ति ग्रहनक्षत्र, देवता, पितर और ब्राह्मणों की पूजा करता है, संसार में उसकी भी पूजा होती है और जो इनका अपमान करता है तो ये उसके लिये अनिष्टकारी बन जाते हैं।

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि। तुर्मिशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः सपर्यामि नाकम्।।

सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा। पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे।।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

पुण्यं पूर्वा फाल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु। राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम्।।

अन्नं पूर्वा रासतां मे अषाढा ऊर्जं देव्युत्तरा आ वहन्तु। अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः श्रविष्ठाः कुर्वतां सुपुष्टिम्।।

आ मे महच्छतभिषग् वरीय आ मे द्वया प्रोष्ठपदा सुशर्म। आ रेवती चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयिं भरण्य आ वहन्तु।।

यानि नक्षत्राणि दिव्यन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु। प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि संतु।।

अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजंतु मे। योगं प्रपद्ये क्षेमं च क्षेमं प्रपद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु।।

स्वस्तितं मे सुप्रातः सुसायं सुदिवं सुमृगं सुशकुनं मे अस्तु। सुहवमग्ने स्वस्त्यमर्त्यं गत्वा पुनरायाभिनन्दन्।।

इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि।। स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु।।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

भावार्थ- हम अनिष्टनिवारक श्रेष्ठ बुद्धि की कामना करते हुए, द्युलोक में विचित्र वर्णों से एक साथ चमकते हुए, नष्ट न होने वाले, तीव्र वेग से सतत गतिशील नक्षत्रों एवं स्वर्गलोक की अपनी वाणी से स्तुति करते हैं।

हे अग्निदेव! कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्र हमारे लिये सुखपूर्वक आवाहन करने योग्य हों।

मृगशिरा नक्षत्र कल्याणप्रद हो। आर्द्रा शान्तिकारक हो। पुनर्वसु श्रेष्ठ वाक्शक्ति देने वाला एवं उत्तमफल दायी हो।

आश्लेषा प्रकाश देनेवाला तथा मघा नक्षत्र हमारे लिये प्रगतिशील मार्ग प्रशस्त करने वाला हो।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पुण्यदायी, हस्त और चित्रा नक्षत्र मंगलप्रद हों। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हमारे लिये अन्नप्रद और उत्तराषाढ़ा बलदायक अन्नरस प्रदान करें।

अभिजित् हमारे लिये पुण्यदायी, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र हमारे लिये उत्तम रीति से पालन करने वाले हों।

शतभिषा नक्षत्र महान वैभवप्रदाता तथा दोनों श्रेष्ठप्रदा नक्षत्र हमें श्रेष्ठ सुख प्रदान करने वाले हों।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

रेवती और अश्विनी नक्षत्र ऐश्वर्यदाता तथा भरणी नक्षत्र भी हमें वैभव प्रदान करने वाले हों। जो नक्षत्र द्युलोक में, अन्तरिक्षलोक में, जल में, पृथ्वी में, पर्वत श्रेणियों तथा दिशाओं में दिखाई देते हैं, चन्द्रमा जिनको प्रदीप्त करते हुए प्रादुर्भूत होते हैं; वे सभी नक्षत्र हमें सुख प्रदान करने वाले हों। कृत्तिका आदि कल्याणप्रद जो अट्ठाईस नक्षत्र हैं, वे हमें अभीष्ट प्रदान करें। नक्षत्रों का सहयोग हमारे लिये लाभप्रद हो। हम प्राप्त वस्तु के संरक्षण में समर्थ हों। हम अहोरात्र के प्रति वन्दना करते रहें, हमें योग क्षेम प्राप्त हो। प्रातः सायं हमारे लिये सुखप्रद हों। हम श्रेष्ठ प्रयोजन हेतु अनुकूल नक्षत्र में गमन करें, जिसमें हरिण आदि पशु पक्षी शुभ संकेत वाले हों। हे अमर्त्य अग्ने! आप हमारी प्रार्थना से प्रसन्न होकर यहां पधारें। हे ब्रह्मणस्पति इन्द्रदेव! पूर्व आदि जिन दिशाओं में आंधी तूफान के रूप में वायुदेव चलते हैं, उन्हें आप उपयुक्त मार्ग से चलने वाला बनाकर हमारे लिये मंगलमय बनायें। हमारा हर तरह से कल्याण हों, हमें निर्भयता की प्राप्ति हो। अहोरात्र रूप देव को हमारा नमस्कार है।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

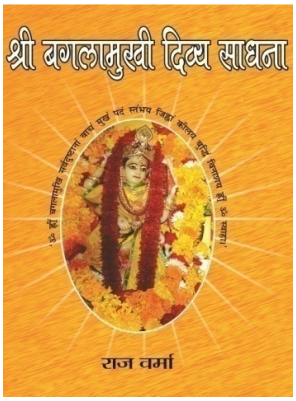

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com